# मृणाल आशुतोष

ई-मेल-mrinalashutosh9@gmail.com


## बथुआ

स्कूल से आते ही मुनियाँ ने बस्ता पटका और दौरी लेकर खेत की ओर निकल पड़ी। अपनी सहेलियों को आवाज़ देकर बुलाया। फिर दो मिनट रुकने को कह वापस घर की ओर भागी।

"माय, हम जा रहे हैं बथुआ तोड़ने।"

माँ का जबाब तो नहीं आया पर, फुफेरी बहन पारुल पूछ बैठी, "मैं भी चलूँ तुम्हारे साथ?"

"हा-हा-हा! तुम चलोगी बथुआ तोड़ने! महानगर से आयी हो दो-चार दिन के लिये। आराम करो घर में।"

"मुझे भी साथ ले चलो न! खेत देखने का मेरा भी बड़ा मन करता है। तुम तो जानती ही हो ना कि वहाँ खेत देखने को नहीं मिलता। प्लीज।"

"चलो, जब एतना ज़िद कर रही हो तो..."

घर से मुश्किल से पचास लग्गा दूर केदार मिसिर का दस कट्ठा का प्लाट था। उसमें मकई के छोटे-छोटे पौधे से ज्यादा बथुआ के पौधे ही थे। सब सहेली बथुआ तोड़ने में भिड़ गयीं। दस मिनट भी नहीं बीता होगा कि गन्दी-गन्दी गालियाँ कानों को चुभने लगीं।

"अरे सब कोय भागो! सनकहबा आ रहा है। भागो जल्दी।"

"पारुल भाग! पकड़ लिया तो मारेगा भी और घर पर आकर बेज्जत भी करेगा।" मुनियाँ भागते हुये चीखी।

जिस बात का डर था वही हुआ। मिसिर जी ने पारुल को पकड़ लिया, "रे, केकर बेटी है? तुम को पहले कभी हम देखे नहीं!"

"मेरे पापा का नाम मिस्टर विनोद सिन्हा है।"

"अच्छा! हमरा गाँव में तो कोई मिस्टर हय्ये नहीं है। किसके यहाँ आयी है?"

"रामचन्दर महतो नाम है मेरे मामाजी का।"

"अच्छा तो रमचंदरा के यहाँ आयी है। अब ई बताओ। बथुआ तोड़ने में मकई का जो नुकसान हुआ, ऊ कौन भरेगा।"

"कितने का नुकसान हो गया आपका?"

"तीन-चार सौ रुपिया का।"

"मैं भर दूंगी। पर, आपने जो हमारा नुकसान किया, वह कौन भरेगा?"

"हम क्या नुकसान कर दिये तुम्हरा?"

"गन्दी-गन्दी गालियाँ जो दिये आप! उसका क्या?"

"....."

"क्या हुआ? मुँह में ताला लग गया। मेरे नाना की उम्र के हैं आप। आपकी पोती-नतनी के बराबर हैं हम सब!"

"हाथ जोड़ते हैं, अब इससे आगे कुच्छो मत कहो। भयंकर गलती हो गिया हमसे। दक्खिन मुँह घुर के कहते हैं कि हम जीवन में कभियो किसी को गाली नहीं देंगे।"